दलितों व शोषितों का पाक्षिक पत्र

हमायती

सम्पादक–डॉ0 सोहनपाल सुमनाक्षर

❑ वर्ष 62 ❑ अंक–24 ❑ दिल्ली ❑ सितम्बर (द्वितीय) 2024 ❑ मूल्य : 2 रु.

मेरे जीवन का पहला पाठ– 'फर्स्ट अर्न, देन लर्न'

डा. सोहनपाल सुमनाक्षर

1958 में दिल्ली बोर्ड से प्रथम श्रेणी में इन्टर पास करने पर परिवार में अपार खुशी थी क्योंकि अब तक परिवार में ही नहीं, बल्कि पूरे गांव में अभी तक किसी ने भी मैट्रिक पास नहीं की थी। अब घर वाले चाहते थे कि मैं आगे पढ़ने की बजाय कोई नौकरी देख लूं क्योंकि अब आगे की पढ़ाई पर होने वाला खर्च जुटाना उनके बस में नहीं था। पर मेरे मन में और आगे पढ़ने की इच्छा थी। सो, घरवालों से अपने मन की बात बताते हुए कह दिया कि मैं उन पर किसी तरह का बोझ नहीं बनूंगा। मैं आगे की पढ़ाई के साथ–साथ पार्ट टाइम काम करके पढ़ाई का खर्च का पैसा जुटा लूंगा। घरवालों को मेरी जिद के सामने झुकना पड़ा।

दिल्ली में हंसराज कालेज में आकर दाखिले के लिए आवेदन किया। चूंकि बोर्ड परीक्षा में मेरे सभी विषयों में 'फर्स्ट क्लास' के मार्क्स थे, सो, मैं किसी भी विषय में बी.ए. कोर्स में प्रवेश ले सकता था, पर मैंने सुना था कि बाबा साहब डा. अम्बेडकर महान विद्वान और दर्जनों भाषा के ज्ञाता होते हुए भी भारत के संस्कृत के विद्वानों ने एक अछूत होने के कारण उन्होंने 'संस्कृत' भाषा पढ़ाने–सिखाने से मना कर दिया था। इसलिए संस्कृत के ग्रन्थों का अध्ययन करने के लिए जर्मनी के संस्कृत विद्वानों से उन्होंने संस्कृत सीखी। इसलिए मेरे मन में यह जिज्ञासा थी कि ऐसा संस्कृत में क्या है जिसे सीखने व पढ़ाने से यहां के पंडितों ने बाबा साहब डा. अम्बेडकर को मना कर दिया था। अपनी इसी जिज्ञासा को जानने के लिए मैंने दिल्ली यूनिवर्सिटी के हंसराज कालेज में संस्कृत विषय में बी.ए. (आनर्स) करने के लिए दाखिला लिया। चूंकि हंसराज कालेज आर्य समाजियों का कालेज था, इसलिए यहां संस्कृत पढ़ाने से मना करने का प्रश्न ही नहीं था। इसी कालेज में मैंने 1959–1964 तक संस्कृत शास्त्रों का अध्ययन करते हुए संस्कृत भाषा में बी.ए. आनर्स व एम.ए. तक की शिक्षा ली। वह भी भारत के संस्कृत के महान विद्वान–प. चारूदत्त शास्त्री व आचार्य सत्यव्रत शास्त्री के संरक्षण में। संस्कृत के साहित्य व शास्त्रों के अध्ययन के बाद ही मुझे ज्ञात हुआ कि बाबा साहब डा. अम्बेडकर को शूद्र जाति का होने के कारण वर्ण व्यवस्था में आकंठ डूबे पंडितों ने उन्हें संस्कृत पढ़ाने से मना कर दिया था, क्योंकि संस्कृत शास्त्रों व ग्रन्थों में शूद्र–दलित–अनार्यों के खिलाफ अनाप–सनाप लिखा हुआ है जिसे पढ़ लेने पर उनकी आलोचना या भर्त्सना का डर उन्हें सता रहा था।

दिल्ली में कालेज में पढ़ाई के खर्चे के साथ–साथ बस किराये व अन्य खर्च बढ़ गये थे। परिवार वालों ने पहले ही कुछ भी खर्च देने से मना कर दिया था। इसलिए मन में पहले जो योजना बनाई थी–फर्स्ट अर्न देन लर्न–यदि पहले कमाओ, फिर उसे लेकर सीखो पर अमल करने की मेरी जिद थी, जिसके आगे मैं किसी तरह की हार नहीं मानने वाला था, पर धन के अभाव की पूर्ति करना इसके लिए जरूरी था।

मेरे ममेरे भाई श्री उदय सिंह जी दिल्ली में केन्द्रीय सरकार के उद्यान विभाग में डिप्टी डायरेक्टर थे। उन्होंने जब सुना कि मेरा दाखिला दिल्ली युनिवर्सिटी के हंसराज कालेज में बी.ए., आनर्स कोर्स संस्कृत में हो गया है तो वे बहुत खुश हुए और एटलस कम्पनी की नई साइकिल लेकर मुझे शाबासी देने मेरे गांव मुखमेलपुर आये। उनकी धर्मपत्नी सुमित्रा देवी, जो दिल्ली के सरकारी स्कूल में 'टीचर' थी, उनके साथ आई थी। डिप्टी डायरेक्टर उदय सिंह जी ने मेरे सारे परिवार को बधाई देते हुए मेरे कन्धों को थपथपाते हुए शाबासी दी और कहा कि जिन पंडितों ने बाबा साहब डा. अम्बेडकर को संस्कृत पढ़ाने से मना कर दिया था, अब उन्हीं के कालेज में बी.ए. आनर्स–संस्कृत में तुम्हें दाखिला मिलना, बड़े गर्व की बात है। हम तुम्हारे कालेज आने–जाने की दिक्कत दूर करने के लिए तुम्हारे लिए यह नई एटलस साईकिल

(शेष पृष्ठ 3 पर)

सम्पादकीय

24 सितम्बर - एक ऐतिहासिक दिन

24 सितम्बर 1932 को भारत रत्न बाबा साहब डा. बी.आर. अम्बेडकर और राष्ट्रपिता महात्मा गांधी के बीच पूना की जेल में एक समझौता हुआ था। जिसके तहत गांधी जी ने अपना आमरण अनशन समाप्त कर दिया था, और बाबा साहब ने 'कम्युनल अवार्ड' वापिस कर दिया था। चूंकि यह समझौता पूना में हुआ था, अतः इसे नाम दिया गया 'पूना–पैक्ट'। इस समझौते के तहत गांधी जी ने बाबा साहब को वचन दिया था कि वह १० वर्ष में अस्पृश्यता को मिटाकर अछूत व सवर्णों के बीच ऊंच–नीच की भावना को खत्म कर देंगे। इसके अलावा दलितों को उनकी आबादी के अनुपात में सभी जगहों पर हिस्सेदारी दी जायेगी। इसकी रचनात्मक रूप देने के लिए 'हरिजन सेवक संघ' की स्थापना की और 'हरिजन' नाम से हिन्दी व अंग्रेजी में दो समाचार पत्र निकालने शुरू किये

सामाजिक स्तर पर भंगी मुक्ति कार्यक्रम और अन्तर्जातीय विवाह भी प्रारम्भ किये। इस तरह गांधी जी ने सवर्ण हिंदुओं के दिलों में हरिजनों के प्रति नरम भाव पैदा करने की कोशिश की, पर क्या वे सवर्णों का हृदय परिवर्तन करने में कामयाब रहे? क्या बाबा साहब को पूना पैक्ट के तहत दिया अपना वचन वे पूरा कर सके? आज भी ये विचारणीय प्रश्न ज्यों के त्यों हमारे सामने मुंह बाये खड़े हैं।

'कम्युनल अवार्ड' में ऐसा क्या था जो गांधी जी को अपने 'अमोघ अस्त्र' आमरण अनशन की घोषणा करनी पड़ी? कम्युनल अवार्ड को समझने के लिए हमें इतिहास में थोड़ा पीछे झांकना होगा। अंग्रेजी सरकार ने देश की आजादी पर राय जानने के लिए लंदन में 1931 में 'राउंड टेबल कान्फ्रेंस' बुलाई थी, उसमें जहां गांधी समेत अन्य भारतीय नेताओं को बुलाया था वहीं दलितों के प्रतिनिधि के रूप में बाबा साहब डा. अम्बेडकर को भी आमंत्रित किया था। बाबा साहब ने ब्रितानिया सरकार से साफ–साफ कहा कि वह भारत को जरूर आजाद करे, पर उससे पूर्व वह देश की एक चौथाई अछूतों (दलितों) को भी उन लोगों से आजादी दिलाए जिनको वह सत्ता सौंपने जा रही है, क्योंकि जब तक दलित सवर्णों के गुलाम हैं, तब तक देश की आजादी उनके लिए बेमायने है। 'राउंड टेबुल कान्फ्रेंस' में बाबा साहब की इस सच्चाई को गांधी जी लाख प्रयन्त करने पर भी झुठला नहीं सके। इस कान्फ्रेंस के परिणाम स्वरूप ही अंग्रेजी हकूमत ने दलितों के उत्थान के लिए 17 अगस्त, 1932 को 'कम्युनल अवार्ड' नाम से एक घोषणा–पत्र जारी किया।

इसके तहत दलितों को दो प्रमुख अधिकार दिये गये। पहला दलितों की बहुल आबादी वाले क्षेत्रों में उनके लिए 'आरक्षित क्षेत्र' बनाने का विधान था, दूसरे प्रावधान में दलितों को दो वोट देने का अधिकार था, एक वोट अपने पसन्द के सवर्ण प्रतिनिधियों को चुनने के लिए था और दूसरे वोट से आरक्षित क्षेत्र से 'दलित प्रतिनिधि' को। सत्ता में उचित भागीदारी के लिए दलितों को 'कम्युनल अवार्ड' में यह अधिकार दिये गये थे। इससे

(शेष पृष्ठ 4 पर)

भारतीय दलित साहित्य अकादमी के प्रकाशन

विश्व धरातल पर दलित साहित्य	डॉ. सुमनाक्षर	100/-
अंधा समाज और बहरे लोग	डॉ. सुमनाक्षर	100/-
सिन्धु घाटी बोल उठी	डॉ. सुमनाक्षर	100/-
अब नहीं रहेंगे हाशिये पर	डॉ. सुमनाक्षर	100/-
अम्बेडकर शतक	डॉ. सुमनाक्षर	100/-
विश्व विभूति डा. अम्बेडकर	डॉ. सुमनाक्षर	100/-
दलित लेखक परिचय ग्रंथ (अंग्रेजी)	डॉ. सुमनाक्षर	250/-
बुद्धा टू अम्बेडकर (अंग्रेजी)	डॉ. सुमनाक्षर	150/-
दलित साहित्य	डॉ. सुमनाक्षर	100/-
अम्बेडकर दर्शन	डॉ. सुमनाक्षर	100/-
हमारे संत और समाज सुधारक	डॉ. सुमनाक्षर	100/-
धर्म और समाज	डॉ. सुमनाक्षर	100/-
आदिम जाति चमार (इतिहास, धर्म, संस्कृति)	डॉ. सुमनाक्षर	300/-
दलित उद्घोष	डा. सुमनाक्षर	100/-
दलित साहित्य की हुंकार–सात समन्दर पार	डॉ. सुमनाक्षर	100/-
युगपुरुष बाबू जगजीवनराम	डॉ. सुमनाक्षर	200/-
प्राचीन आदिम जाति वाल्मीकि (इतिहास, धर्म, संस्कृति)	डॉ. सुमनाक्षर	100/-
मेरे साक्षात्कार–मेरा जीवन संघर्ष	डा. सुमनाक्षर	300/-
सभ्यता, संस्कृति, समाज और साहित्य	आचार्य गुरुप्रसाद	100/-
भारत रत्न डा. बी.आर. अम्बेडकर	राजमल 'राज'	100/-
मूल भारती से दलित	राजमल 'राज'	100/-
अम्बेडकरवाद बनाम सामाजिक परिवर्तन	राजमल 'राज'	100/-
दलित साहित्य–दशा और दिशा	डा. माता प्रसाद	200/-
दलित साहित्य से सामाजिक परिवर्तन	डा. माता प्रसाद	100/-
भारत की गुलामी के 22 सौ साल	प्रदीप कुमार मौर्य	250/-
बौद्ध धर्म–गया से अयोध्या तक	प्रदीप कुमार मौर्य	120/-
गांधी, अम्बेडकर और दलित	प्रदीप कुमार मौर्य	100/-
हम एक हैं	डा. माता प्रसाद	100/-
रैदास से संत शिरोमणि गुरु रविदास	डा. माता प्रसाद	100/-
ताकि सनद रहे	डा. सुमनाक्षर	200/-
Who's who Dalit Writers in India	Dr. Sumanakshar	500/-
Who's Who–International & National Awardees of B.D.S.A.	Dr. Sumanakshar	500/-

पुस्तक मंगाने के लिए अग्रिम राशि निम्नलिखित अकादमी के खाते में भेजें

Bharatiya Dalit Sahitya Akademi
A/c No. - 2592101012292 (Canara Bank)
IFSC - CNRB0002592
Branch - Model Town, Delhi

पृष्ठ 1 का शेष....मेरे जीवन का पहला पाठ-'फर्स्ट अर्न, देन लर्न'

लाये हैं, अब निश्चित होकर मन लगाकर अपनी पढ़ाई करो, इससे तुम्हारा, तुम्हारे परिवार का, समाज और देश का नाम रोशन होगा। इस अवसर पर भाभी सुमित्रा देवी ने एक थैला मुझे पकड़ाते हुए कहा कि अब तुम गांव वाले नहीं रह गये हो। शहर के कालेज में दाखिला लेकर अब शहरी हो गये हो। इसलिए दिल्ली शहर के कालेज में तुम्हें कुर्त्ता पाजामा छोड़कर पैंट–शर्ट पहनकर दूसरे छात्रों की तरह जाना है। इसीलिए हम तुम्हारे लिए ये नयी पैंट–शर्ट लाये हैं। इसे पहनकर मन लगाकर पढ़ो और बड़े आदमी बनो, यही हमारी कामना है।

ममेरे भाई द्वारा दी गई नई साईकिल ने दिल्ली शहर तक आने–जाने की मेरी कठिनाई हल कर दी और उनके द्वारा दी गई पैंट–शर्ट की नई ड्रेस ने भी मेरे अन्दर से हीन भावना निकाल कर उच्च भावना का संचार कर दिया। पर 'पहले कमाओ और फिर शिक्षा को बढ़ाओ' में सबसे बड़ी अड़चन अभी–खर्चे की पूर्ति के लिए रुपये–पैसों की थी। इसे भी जाते–जाते भाभी सुमित्रा देवी ने यह कहकर हल कर दिया–''तुम्हारे खर्चों के लिए धन की कमी को हम समझते हैं। इसके लिए हम तुम्हें शहर में बच्चों को ट्यूशन पढ़ाने का काम दिला देंगे। कालेज के बाद जो भी समय मिले उसमें बच्चों को ट्यूशन पढ़ाने में महीने में सौ–डेढ़ सौ रुपये तो जरूर मिल जायेंगे जिससे तुम्हारे पढ़ाई के खर्चे की भरपाई जरूर हो जायेगी।'' उनके ट्यूशन पढ़ाने के सुझाव ने मेरे अन्दर नई जान डाल दी कि अब आने–जाने के लिए साईकिल मिल गई, और कालेज के खर्चों के लिए भाभी ने 'ट्यूशन' का बन्दोबस्त कर दिया है। पर अभी मुझे नाकाफी लग रहा था क्योंकि घर के कुछ खर्चे मुझे उठाने थे।

मैं दिल्ली नई साईकिल से आने लगा। कालेज में मन लगाकर पढ़ने लगा। भाभी सुमित्रा देवी ने अपने स्कूल की बाल–बालिकाओं की जो दो ट्यूशन दिलाई थीं, उनको ट्यूशन पढ़ाने लगा जिससे महीने में 100 रुपये आमदनी होने लगी, लेकिन पढ़ाई पर अपना खर्च और घर का खर्च जुटाने के लिए यह नाकाफी था। अब क्या किया जाए? सारा समय तो कालेज की क्लास के बाद ट्यूशन पढ़ाने में चला जाता था। कुछ समय बचता वह पढ़ने–लिखने में चला जाता था। ऐसी हालत में कहीं ओर नौकरी भी कर नहीं सकता था। इसी बीच एक दिन 'सेवाग्राम' साप्ताहिक समाचार पत्र के मालिक व मुख्य संपादक श्री जी.पी. जैन का बुलावा आया। मैं अगले दिन कालेज के बाद उनके दरियागंज में स्थित उनके कार्यालय पहुंच गया और नमस्कार करने के बाद उनसे बुलाने की बावत पूछा। जी.पी. जैन ने मुस्कराते हुए कहा कि हमारे 'सेवाग्राम' समाचार पत्र में आपके जो लेखादि छपते हैं, हमारे पाठक उन्हें पढ़कर तुम्हारी बहुत प्रशंसा करते हैं। काफी दिनों से आपके लेखादि अपने पत्र में छापने के लिए हमें नहीं मिल रहे थे, तो हमने सोचा था कि ज्यादा उम्र का होने के कारण आपने लिखना–पढ़ना छोड़ दिया होगा। यही जानने के लिए आपको बुलाया है, पर आप तो अभी 20-22 साल के हो, पर गांव–देहात पर आपकी पकड़ बहुत गहरी है। क्या आप हमारे समाचार पत्र 'सेवाग्राम' में उपसम्पादक के रूप में नौकरी करोगे? आपको अच्छा वेतन देंगे। मैंने इसके लिए जैन साहब का धन्यवाद करते हुए बताया कि मैंने दिल्ली विश्वविद्यालय के हंसराज कालेज में बी.ए. आनर्स (संस्कृत) कोर्स करने के लिए दाखिला लिया है, ऐसे में 'फुल टाईम' नौकरी नहीं कर सकूंगा? इस पर जैन साहब ने कहा–''ठीक है आप हर रोज नौकरी करने हमारे कार्यालय नहीं आ सकते, पर घर पर बैठे–बैठे हमारे पत्र 'सेवाग्राम' के लिए गांव व देहात पर नियमित रूप से लिखते रहिये, उसका उचित 'पारिश्रमिक' (मेहनताना) हम देंगे, और जब कालेज की लम्बी छुट्टी मिले, तो नियमित रूप से यहां नौकरी कर लेना।'' इसके लिए मैंने 'हां' भर ली। उसके बाद मैं पढ़ाई व ट्यूशन से समय निकाल कर देहात व गांवों के विषय में नियमित लिखने लगा। उनके 'सेवाग्राम' समाचार पत्र में नियमित रूप से मेरे लेखादि छापे जाते। और फिर लेखादि छपने पर उनका पारिश्रमिक (मेहनताना) घर बैठे मनीआर्डर से मुझे मिलने लगा। 'सेवाग्राम' ने मुझे नाम दिया, ख्याति दी और सन्तोषजनक 'मेहनताना' दिया। इससे मेरी आर्थिक रूप से कमी पूरी होने लगी। कालेज की छुट्टियों में 'सेवाग्राम' पत्र के उप–सम्पादक के रूप में मैं अपनी सेवायें देता। सेवाग्राम समाचार पत्र के 12 पृष्ठों में से 8 पृष्ठ मेरे लेखादि के रूप में मेरे नाम के साथ छपे होने से पत्रकार व लेखक के रूप में मेरा नाम सब जानने लगे।

'सेवाग्राम' समाचार पत्र के मालिक व मुख्य सम्पादक श्री जी. पी. जैन दिल्ली के पत्रकारिता कालेज में 'पत्रकारिता' पर लेक्चर देने जाते थे। इसलिए पत्रकारिता जगत में उनका विशिष्ट नाम था। दैनिक समाचार पत्रों में नौकरी देने से पहले लोगों को समाचार पत्र के मालिक पत्रकारिता के विषय में 'प्रेक्टीकल नालेज' लेने के लिए 'सेवाग्राम' कार्यालय भेजते थे। जैन साहब पत्रकारिता के गुर सीखाने के लिए उन्हें मेरे अधीन कर देते थे। उसके बाद जब वे अपने पदों पर लौटते थे तो मेरे नाम का गुणगान करने से नहीं चुकते थे। जैन साहब का मुझ पर इतना विश्वास था कि 'सेवाग्राम' के लिए किसी भी राजनेता, साहित्यकार, कलाकार का 'इन्टरव्यू' लेना होता तो इसके लिए वे मुझे भेजते थे। मुझे याद है कि राजस्थान के मुख्यमंत्री रहे

जगन्नाथ पहाड़िया और महान राजनेता श्री राम मनोहर लोहिया का 'इन्टरव्यू' लेने मुझे जैन साहब ने भेजा था। हिन्दुस्तान हिन्दी के मुख्य सम्पादक श्री मुकुट बिहारी वर्मा ने अपने पुत्र विनय कुमार वर्मा तथा नवभारत टाइम्स के सम्पादक श्री अक्षय कुमार जैन ने श्री रतनलाल शान्डिल्य व श्री बनारसी सिंह को नवभारत में नौकरी देने से पहले 'सेवाग्राम' में कुछ दिन प्रशिक्षण के लिए भेजा था जिन्होंने मेरे अधीन पत्रकारिता का प्रशिक्षण लिया था।

'सेवाग्राम' पाक्षिक समाचार पत्र से जहां मुझे अपार लोकप्रियता मिली वहीं मेरे अधीन प्रशिक्षण लेकर विभिन्न समाचार पत्रों में नौकरी पाने पर उनसे मेरे अटूट सम्बन्ध भी बन गये, जिसका फायदा मुझे समय–समय पर मिलता गया। जैन साहब ने मेरी लेखनी को निखारा, मेरी भाषा को संवारा, मुझे अपने पत्र 'सेवाग्राम' का सह–सम्पादक व उप–सम्पादक बनाया और मुझे 'सेवाग्राम' पत्र में यशोचित सम्मान दिया, जिसका फायदा मुझे बाद के वर्षों में सामाजिक, राजनीतिक, शैक्षणिक क्षेत्रों में दलित, किसान, मजदूर व वंचित समाज के लोगों के हितों की लड़ाई सफलतापूर्वक लड़ने में मिला।

'सेवाग्राम' समाचार पत्र के माध्यम से मेरा सम्बन्ध अन्य समाचार पत्र, पत्रिकाओं व पत्रकारिता शिक्षण संस्थानों से जुड़ा जिन्होंने मुझे अपने समाचार पत्रों के लिए लेख लिखने व पत्रकारिता पर अपने व्यक्तत्व देने का अवसर दिया। नवभारत टाइम्ज उन दिनों दैनिक समाचार पत्रों में प्रमुख पत्र था। वहां समाचार पत्र में मेरे लेख, निबन्ध, वार्ता छापने के लिए मुख्य सम्पादक श्री अक्षय कुमार जैन ने आमंत्रित किया, वहीं विशेष संवाददाता के रूप में कार्य करने के लिए समाचार सम्पादक श्री फतेहचन्द शर्मा 'आराधक' व श्री हरिदत्त शर्मा ने प्रोत्साहित किया। हिन्दुस्तान हिन्दी दैनिक में समाचार सम्पादक श्री केदारनाथ शर्मा ने मुझे ग्रामीण दिल्ली का विशेष प्रति–निधि नियुक्त कर दिल्ली के गांवों पर विशेष लेख लिखकर धारावाहिक रूप में प्रकाशित किये, जनका नकद पारिश्रमिक मुझे मिलता रहा।

सम्पादन व पत्रकारिता में मेरी ख्याति व दक्षता को देखकर अ.भा. नशाबन्दी परिषद् की पत्रिका 'नशाबन्दी सन्देश' का उप–सम्पादक के पद पर नियुक्त किया गया। हिन्दी की सुप्रसिद्ध पत्रिका 'मल्लिका' मासिक पत्रिका का भी मैं उप–सम्पादक रहा और यहां लेखक, पत्रकार व साहित्यकार श्री मुरारी लाल त्यागी के सानिध्य में कार्य करने का अवसर मिला। 'सेवाग्राम' में कृषि व ग्रामीण अंचल पर लिखे मेरे लेखों से प्रभावित होकर खेती पत्रिका के सम्पादक श्री शक्ति त्रिवेदी ने कृषि मंत्रालय की 'खेती' पत्रिका में कृषि पर नियमित लेख लिखने का अनुबन्ध किया। इसी प्रकार का नियमित लेख लिखने का अनुबन्ध दिल्ली सरकार की पत्रिका 'बिजली' के लिए उसके सम्पादक श्री के.सी. चतुर्वेदी ने किया। पंजाब से अलग होकर पृथक हरियाणा बनने पर 'दिनमान' पत्रिका ने अपने हरियाणा विशेषांक पर विशेष लेख लिखने के लिए मुझे आमंत्रित किया, जिसका अच्छा पारिश्रमिक प्राप्त हुआ।

इन उपरोक्त पत्र/पत्रिकाओं के अलावा भी देश की अन्य सैकड़ों पत्र/पत्रिकाओं में विभिन्न विषयों पर मेरे लेख प्रकाशित हुए जिनसे अच्छे पारिश्रमिक के अलावा पत्रकारिता व लेखन के क्षेत्र में अच्छी ख्याति प्राप्त हुई, जिन्होंने मुझे साहित्य जगत में अपनी अलग परख के साथ पांव जमाने का मौका दिया।

मैं जिस हंसराज कालेज से बी.ए. आनर्स (संस्कृत) कोर्स कर रहा था, वहां की अपनी पत्रिका 'हंस' निकलती थी। उसके 1960 के अंक में मेरा एक लेख छपा था जिसका शीर्षक था–'सत्यं शिवं सुन्दरम्'। इस लेख की बहुत प्रशंसा हुई और कालेज की ओर से इस लेख पर मुझे 'गोल्ड मेडल' देकर सम्मानित किया गया था। यह थी मेरी अब तक की यात्रा, जिसने मुझे अपने पैरों पर खड़ा होना सिखाया–' 'फर्स्ट अर्न, देन लर्न' के साथ।•

सम्पादकीय का शेष....24 सितम्बर – एक ऐतिहासिक दिन

निश्चित रूप से सवर्णों को दलितों वोटों का महत्व का अहसास होता और वे उसी के लालच में उन्हें उचित तरजही देना शुरू करते, वहीं दलितों में से भी उनके अच्छे प्रतिनिधि चुनकर विधान सभा या संसद जाते जो उनके विकास, कल्याण और उन्नति की बात सोचते। दलितों की स्थिति में राजनैतिक, सामाजिक और आर्थिक स्तर पर इससे काफी बदलाव आता। और शायद दलितों की दशा और स्तर आज वह नहीं होती, जो है।

गांधी जी को 'कम्युनल अवार्ड' में ऐसा क्या नजर आया कि वह घोषणा कर बैठे कि जब तक इसे वापिस नहीं लिया जायेगा, अन्न–जल ग्रहण नहीं करेंगे, आज भी हमारी समझ से परे है। इससे पूर्व मुस्लिम, सिख, ईसाई सभी के लिए अंग्रेजी सरकार ने सहूलियतों की घोषणा की, पर कभी भी गांधी जी ने उनका विरोध नहीं किया, फिर अछूतों को दी गई सुविधाओं के मानने में ही वे 'जिद्दी' क्यों हो गये?

गांधी जी सनातनी हिन्दू थे। चतुर्थ वर्ण में अछूतों के होने के कारण वे इन्हें भी हिन्दुओं का अंग मानते थे। हमें लगता है कि 'कम्युनल अवार्ड' से दलितों को मिलने वाले दो वोटों के अधिकार से उन्हें हिन्दुओं से अलग होने का खतरा नजर आ रहा था, दूसरी तरफ वह अछूतों को एकदम दो वोटों की ताकत देने के लिए तैयार नहीं थे, तीसरे हिन्दुओं के आजीवन बंधुआ 'हरिजन' अंग्रेजों से कोई सहूलियत सीधे क्यों लें। कोई

सहूलियत लेनी है, तो उसे वह स्वयं देंगे।

चौथा, 'कम्युनल अवार्ड' से प्राप्त अधिकार बाबा साहब डा. अम्बेडकर का 'राउंट टेबल कान्फ्रेंस' का परिणाम था, और इसका श्रेय सीधा डा. अम्बेडकर को जाता था। गांधी जी इसका सारा श्रेय डा. अम्बेडकर को देकर उन्हें 'नेता' नहीं बनाना चाहते थे।

पांचवां, संसद या विधान सभा में दलितों के नुमायदे जब उनकी पसन्द से ही चुने जायेंगे, तो फिर सवर्णों की 'चौधराहट' को कौन पूछेगा। इसीलिए गांधी जी किसी भी कीमत पर इस 'कम्युनल अवार्ड' को लागू करने के इच्छुक नहीं थे। इस पर अमल को रोकने के लिए उन्होंने 'आमरण–अनशन' की घोषणा कर दी। गांधी जी के इस छलावे और हिन्दू नेताओं के घटिया प्रचार के दबाव में बाबा साहब को आखिर में झुकर कर 'कम्युनल अवार्ड' को रुकवाना पड़ा। पर क्या 'पूना पैक्ट' के समझौते को गांधी जी या उनके अनुयायी अभी तक पूरा कर पाये हैं?

– डा. सुमनाक्षर

दलित साहित्य से सामाजिक उत्थान

एल.एन. खोब्रागढ़े

समाज का एक वर्ग यदि कई वर्षों से लगातार ऐसे साहित्य का निर्माण करता हो जिससे कि उसके अपने वर्ग को स्वार्थ सिद्धि हो और उसमें उनकी श्रेष्ठता झलके तथा वह सम्पूर्ण समाज की प्रगति में बाधक हो तो समाज के प्रत्येक प्रबुद्ध हितैषी मानव का यह कर्तव्य व अधिकार बनता है कि उसको सही दिशा दे तथा पाखण्ड का भण्डाफोड करे।

प्राचीन लिखे गये धर्म ग्रन्थ साहित्य का बहुत सा अंश न तो तर्क की कसौटी पर सही उतरता है न ही अन्तर्राष्ट्रीय बन्धुत्व भावना की परिधि में समयानुकूल है। उनके दिये गये गलत विचारों व मान्यताओं को समाप्त करना ही होगा।

कथित पवित्र ग्रंथ रामायण में उल्लेख मिलता है कि मर्यादा पुरुषोत्तम कहे जाने वाले राम ने शम्बूक का वध इसलिए किया क्योंकि शूद्र होकर उसने विद्या प्राप्त करने का और जप तप करने का दुस्साहस किया। महाभारत में प्रसंग आता है कि गुरु द्रोणाचार्य ने महान धनुर्धर एकलव्य के हाथ का अंगूठा इसलिए कटवा दिया कि वह शूद्र होकर धनुष विद्या सीख गया था।

धर्म ग्रंथों व ऐसे साहित्य की रचना की गई थी जिसके तहत शूद्र शिक्षा से वंचित कर दिया जाता था। कीड़े–मकोड़े सा जीवन बिताने को मजबूर कर दिया था। वह अज्ञानता, अशिक्षा के कारण उनकी सेवा करने को विवश था। धर्म ग्रन्थ, वेद, पुराण, भागवत, उपनिषद सभी अन्य अधिकांश साहित्य ने दलितों की उपेक्षा ही की थी, जिनका निर्माण भी धर्म गुरुओं ने अपने सुख ऐश्वर्य प्राप्त करने का विधान रचकर किया जिसमें निहित वर्ण और जाति के सिद्धान्तों ने हिन्दुओं के बीच लाखों दीवारें खड़ी करके एक दूसरे का शत्रु बना दिया।

उन्होंने मानव को मानव न कहकर ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र कहा। आदर्श धर्म ग्रंथ का नाम देकर भगवान की उत्पत्ति बताया। इनके रचयिता और रचना के नायक पात्र अपनी थोथी आत्म प्रशंसा करते हुए 'जगत गुरु' या 'आध्यात्मिक नायक' या स्वयं ईश्वर का अवतारी बन गये। गीता के रचयिता ने ईश्वर के पूर्ण अवतार श्रीकृष्ण द्वारा स्त्री, शूद्र ओर वैश्य को पाप योनि वाले घोषित करवाया।

देश को स्वतन्त्र हुए 77 वर्ष हो गये हैं, पर आज भी देश में भेदभाव, असमानता, छुआछूत और दलित विरोधी व्याधि का समुचित उपचार नहीं हो सका है। आज भी देश की करीब 60% आबादी अशिक्षित है एक ओर दलित वर्ग व आदिवासियों को शिक्षितों की संख्या न्यून है जो शिक्षित हैं, उसमें प्राथमिक शिक्षा की संख्या अधिक है। उच्च शिक्षित संस्था न्यून है।

आज भी संविधान का खुला उल्लंघन हो रहा है और करोड़ों लोग अपने मानवीय अधिकारों से वंचित है। यदि हमें अपने देश को महान बनाना है तो अन्य पहलुओं के साथ–साथ ऐसे साहित्य का निर्माण करना होगा जो दलितों को मानोचित सामान्य अधिकारों की उपलब्धि प्रदान कर सके। दलित उत्थान और उससे जुड़ी तमाम तर्क संगत मुसीबत वर्तमान सामाजिक विकास में अपना अहम् स्थान रखता है जिसमें दलित साहित्य भी एक है।

भारतीय संविधान में मौलिक अधिकारों व नीति निर्देशक तत्वों का प्रतिपादन किया गया है जिसके तहत शिक्षा का, समानता का व अन्य सभी अधिकार समान हैं फिर भी क्या कारण है कि दलितों की आर्थिक दशा निर्धनता की भयानक खाई में डूब चुकी है। इसका कारण है शिक्षा का अभाव, ज्ञान का अभाव, दलितोत्थान प्रचुर साहित्य का अभाव।

भारतीय दलित साहित्य अकादमी ने बहुत हद तक समाज में दलितों को यथोचित सम्मान व न्याय उपलब्ध कराने, सशक्त वैचारिकी प्रदान करने, और स्वस्थ समाज की पुनर्स्थापना का उनकी सामाजिक अस्मिता बनाये रखने का बीड़ा उठाया है जो कि सम्पूर्ण देश के समाज के उत्थान हेतु दलित वर्ग समाज का उत्थान भी एक आवश्यक कदम है।

देश के टूटन और समाज के विघटन को रोकना है तो सभी को समता, सम्मान और स्वतंत्रता प्रदान करनी होगी। दलितों में से संकीर्णता दूर करके उनमें स्वाभिमान जागृत करने का महत्वपूर्ण कार्य दलित साहित्य ही कर सकता है। हमें उसके निर्माण में सहयोगी होना चाहिए। •

दलित साहित्यकार और भारतीय दलित साहित्य अकादमी

कंवल भारती

यदि एक समय में कोई मुझसे दलित–साहित्य का परिचय देने को कहें, तो मैं कहूंगा कि यह वह साहित्य है, जिसकी सम्पूर्ण प्रतिबद्धता डा. अम्बेडकर और उनकी विचारधारा के साथ है। यद्यपि बाबू जगजीवन राम को इस मान्यता की भी उपेक्षा नहीं की जा सकती कि 'रविदास जी (और उनकी कोटि के तमाम सन्त) उस धर्म की परम्परा को मानते थे, जो वैदिक धर्म की उत्पत्ति के पूर्व इस देश के मूल निवासियों में विकसित थी', और यह कहना भी ऐतिहासिक दृष्टि से तर्कसंगत होगा कि भारतीय चिन्तन परम्परा में विरोध की जो समानान्तर धारा प्रवाहित हुई, वही दलित सन्तों और चिन्तकों की धारा थी, जिसे भारतीय साहित्य में तिरोहित और समाहित करने के निरन्तर प्रयास किये गये। किन्तु विचारणीय तथ्य यह है कि दलित समाज को इस ऐतिहासिक का सम्पूर्ण बोध डा. अम्बेडकर के जागरण आन्दोलन के उपरान्त ही हुआ, जिसके परिणाम स्वरूप सम्पूर्ण वाङ्मय का विस्फोटक मूल्यांकन करता हुआ वर्तमान दलित साहित्य अस्तित्व में आया। अतः कहना न होगा कि डा. अम्बेडकर दलित साहित्य के जनक ही नहीं, अपितु वरिष्ठ प्राणतत्व हैं, जिसके बल पर दलित साहित्य अपना मूल स्थापित करता हुआ, निरन्तर विकसित हो रहा है।

डा. अम्बेडकर दलित वर्गों की महान विभूति थे, जिन्होंने दलितों की दीनता को समाप्त करने और उन्हें स्वतन्त्र चेता प्राणी बनाने के लिए पूरे देश में एक नया वैचारिक आन्दोलन पैदा किया, जिसे विश्व की सबसे बड़ी क्रान्ति के रूप में स्मरण किया जाता है। यह क्रान्ति असमानता, पराधीनता और अन्याय के विरुद्ध एक मुक्त मानस का विद्रोह था, जिसने समता, स्वतन्त्रता और न्याय पर आधारित नये समाज और नये मनुष्य की मूर्तरूप दिया। भारतीय दलित साहित्य इसी नये समाज और नये मनुष्य की प्रतिष्ठा का साहित्य है।

दलित साहित्य के रचनाकार द्रष्टा, भोक्ता और सृष्टा रूप में दलित वर्गों के व्यक्ति ही हो सकते हैं। यद्यपि अन्य वर्गों के रचनाकारों द्वारा भी दलित–समाज और उसकी समस्याओं पर साहित्य का निर्माण हुआ है, जिनमें प्रेमचन्द्र, निराला, अमृतलाल नागर और जगदीश गुप्त प्रमुख है, परन्तु इसमें दलित समाज की वर्णित स्थिति मात्र सहानुभूति और दयाभाव से पूर्ण है, जो दलितों की दीनता को यथास्थिति ही प्रदान करती है। इसके विपरीत, दलित–समाज के मापदण्ड दलित वर्गों की विद्रोही मनःस्थिति पर आधारित है। यह स्थिति में नहीं, अपितु, स्थिति को बदलने में विश्वास करता है। दलित रचनाकार सम्पूर्ण क्रान्ति का पक्षधर है। शान से जीना, शान से मरना, अन्याय का विरोध, न्याय का समर्थन, सम्यक जीविका और क्षितिज के पार की उपेक्षा तथा धरती के कठोर यथार्थ से जुड़कर नवीनतम सृजन ही दलित साहित्य का मापदण्ड है।

मराठी दलित कवि श्री त्र्यंवक सत्य काले की निम्न पंक्तियों में दलित साहित्य का मर्म बोलता है–

'ईश्वर तुम तो नाममात्र
के लिए रह गये हो।
सिन्दूर का स्वामी
बूढ़ा पति जैसे
विनोद के लिए होता है वैसे।
हम गॉडमेकर
तुम्हें नोटिस देते हैं–
नेग्लीजेंस आफ ड्यूटी की
युवर सर्विस इज नाट रिक्वार्ड।'

किन्तु जिस प्रकार अन्य वर्गों के लेखकों की रचनाओं को दलित साहित्य के अन्तर्गत नहीं रखा जा सकता, उसी प्रकार यह निश्चित है कि दलित वर्गों के सभी लेखक भी दलित–साहित्यकार की कोटि में नहीं रखे जा सकते। दलित–साहित्य का रचयिता यदि डा. अम्बेडकर और उनकी विचारधारा के प्रति प्रतिबद्ध नहीं है, तो वह 'विद्रोही साहित्य' का सृजन नहीं कर सकता, जो दलित साहित्य का मुख्य मापदण्ड है। उदाहरण के लिए दलित कवि डा. अम्बेडकर और राम या कृष्ण को एक साथ लेकर नहीं चल सकता, और यदि कुछ रचनाकार इस मार्ग के पथिक हैं, तो उन्हें दलित–साहित्य का पक्षधर मानना भूल ही है।

दलित रचनाकार के द्रष्टा और भोक्ता मन का द्वन्द्व ही उसकी रचना को प्रभावशाली बनाता है। अन्तर से निःसृज द्वन्द्व विद्रोह को जन्म देता है जो भोगे हुए परिवेश की सघन अनुभूतियों का प्रतिरूप है। जो रचनाकार इस पीड़ा से गुजरता है, वही श्रेष्ठ दलित साहित्य का निर्माण करता है। प्रसिद्ध दलित कवि डा. सोहनपाल सुमनाक्षर की एक कविता की पंक्तियां द्रष्टव्य हैं–

'तुम नीच हो
सभी नीच काम करना ही
तुम्हारा धर्म है।
हम इन धर्म के ठेकेदारों से
पूछते है कि तुम्हारा धर्म
तब भ्रष्ट नहीं होया,
जब जवान अछूत कन्या
रूपी के साथ
बलात्कार किया था तुमने

हिमायती
7 / सितम्बर (द्वितीय) 2024 (कुल पृष्ठ 4)
प्रकाशन तिथि : 31 अगस्त, 2024
आर. एन. आई. नं. 40611/62
रजि. G-3/DL(N)/090/2018-2020

तुम्हारा धर्म उस समय कहां था
जब रूपी की मां ने दाई बनकर
जन्मा था तुम्हें।
और नहलाया था सबसे पहले
अपने हाथों से।
तुम्हारा धर्म अभी तक
भ्रष्ट क्यों नहीं हुआ
पीते–पीते पानी उस कुएं का
जिसे अपने हाथों से खोदते
रूपी का बापू वहीं पर
दबकर मर गया था।
इसलिए हम कहते हैं कि
तुम धोखेबाज हो।
और तुम्हारा धर्म झूठ और
धोखेबाजी का पुलन्दा है।'

डा. सुमनाक्षर की इस रचना में हिन्दू धर्म के प्रति डा. अम्बेडकर के उस दृष्टिबोध की पक्षधरता है, जो रेखांकित करता है कि हिन्दू धर्म मानवता विरोधी है। यह दृष्टिबोध जितना व्यवहारिक डा. अम्बेडकर को था, उतनी ही व्यवहारिकता डा. सुमनाक्षर की कविता में भी महसूस की जा सकती है।

अतः दलित साहित्य निरुद्देश्य नहीं है, बल्कि सोद्देदय है। किन्तु यह उद्देश्य स्वान्तः सुखाय नहीं है और न कला के लिए कला का निरूपण ही इसका ध्येय है। इसका लक्ष्य शोषण–मुक्त समाज की संरचना करना है। जहां शोषण होता है, वहां शोषक श्रेणी भी होती है। इस देश के दलित वर्गों के लोगों की संख्या कुल जनसंख्या का अस्सी प्रतिशत है, जो मुट्ठी भर शोषक श्रेणी के दमन–चक्र के शिकार हैं। अतः दलित–साहित्य को बहुजन–हिताय और बहुजन सुखाय कहना ज्यादा ठीक होगा। इस प्रकार साहित्य के क्षेत्र में दलित रचनाकारों की भूमिका सर्वाधिक गम्भीर और उत्तरदायित्वपूर्ण है। श्री मोहनदास नैमिशराय दलित रचनाकारों को सम्बोधित करते हुए एक कविता में कहते हैं–

'शोषण के चंगुल से
नया आयाम तुझे बनाना है।
शोषितों के भाग्य का
नया इतिहास तुझे बनाना है।
राहों की पगडंडियों को
नया रास्ता तुझे दिखाना है।
भूले–बिसरों को उनका
इतिहास तुझे बताना है।
राह में शोषितों की
बलिदानों के पुष्प बिखराना है,
जिसने जीवन अर्पण किया,
उसका इतिहास तुझे बनाना है।'

कहा जाता है कि हिन्दी में दलित साहित्य अभी बाल्यावस्था में है। परन्तु, ऐसा कहना उचित नहीं है। जैसा कि मैं शुरू में कह चुका हूं कि दलित साहित्य विद्रोह का साहित्य है और विद्रोह की धारा भारतीय चिन्तन परम्परा में बहुत पुरातन है। रविदास आदि सन्तों ने उस धारा को ग्रहण किया और देश के लोकसाहित्य में आज भी वह धारा विकासमान है।

महाशय रूपचन्द जैसे कितने ही लोककवियों ने इसी धारा को ग्रहण कर अपनी रचना धर्मिता से दलित समाज में विशिष्ट स्थान प्राप्त किया। यदि इन कवियों में डा. अम्बेडकर और उनकी विचारधारा के प्रति सम्पूर्ण प्रतिबद्धता नहीं है, तो इसका कारण उनमें आवश्यक एकेडमिक शिक्षा का अभाव है, परन्तु यह नहीं भूलना चाहिए कि इन्हीं लोककवियों में से हमें सुशिक्षित और प्रतिभाशाली रचनाकारों के रूप में कवियों में से स्वामी अछूतानन्द, चन्द्रिका प्रसाद जिज्ञासु, बिहारीलाल 'हरित', माता प्रसाद, मानवशील, भिक्षु धम्मपाल और बुद्धसंघ प्रेमी जैसे रत्न प्राप्त हुए हैं जिन्हें हिन्दी में दलित साहित्य का जन्मदाता कहा जा सकता है। इनकी रचनाओं से कितनी ही नई प्रतिभाओं को प्रेरणा मिली और उनका मार्ग प्रशस्त हुआ, जो आज दलित साहित्य के सशक्त हस्ताक्षर हैं।

हिन्दी दलित साहित्य के जन्मदाताओं में स्वामी अछूतानन्द एक पृथक 'आदि हिन्दू आन्दोलन' उद्भावक थे, जो कितनी ही बातों में डा. अम्बेडकर के धार्मिक विचारों से भिन्न था, परन्तु उनके आन्दोलन का प्रभाव इतना सशक्त था कि स्वयं डा. अम्बेडकर उनकी विद्वत और संघर्षशीलता के कायल थे। स्वामी अछूतानन्द ने हिन्दी में 'आदि हिन्दू' पत्र प्रकाशित किया और विपुल साहित्य सृजन किया, जिसमें दलित वर्गों को उनके गौरवशाली इतिहास से परिचित कराया। यह वह काल था, जब डा. अम्बेडकर के आन्दोलन को देश व्यापी होने में अभी दस वर्षों का समय चाहिए था, जबकि स्वामी जी का आदि हिन्दू आन्दोलन पूरे उत्तरी भारत में प्रभावी था और अन्य प्रान्तों में उसका नोटिस लिया जा रहा था। अतः कहना न होगा कि हिन्दी भाषी क्षेत्रों में दलित जागृति और दलित साहित्य की मूल प्रतिष्ठा का श्रेय स्वामी अछूतानन्द को ही जाता है।

स्वामी अछूतानन्द की रचनाओं में आदि वंश का डंका, आदि खण्ड काव्य, मायानन्द बलिदान, रामराज्य तथा अन्य असंख्य भजन व कविताएं हिन्दी दलित साहित्य का महत्वपूर्ण भाग है। उनकी 'प्रभात फेरी' शीर्षक रचना की कुछ पंक्तियां प्रस्तुत हैं–

''ऐ आदिवंश वालों
जागो हुआ सवेरा
अब मोह नींद त्यागो
देखो हुआ उजेरा
अन्याय की निशा से
अन्धेरा से न डरना
होगा उदय तुम्हारा
भागेगा दुख घनेरा।
तुम ही निसर्ग से ही
भारत के आदि स्वामी
गैरों का हो गया है
इस देश में बसेरा।''

डा. अम्बेडकर की विचारधारा के अनुरूप बुद्ध, कबीर, रैदास और स्वामी अछूतानन्द को एक समान

विचार–सूत्र में प्रस्थापित कर दलित साहित्य में क्रांतिकारी परिवर्तन लाने का श्रेय श्री चन्द्रिका प्रसाद जिज्ञासु को जाता है। जिज्ञासु जी बहुमुखी प्रतिभा के धनी थे। कविता, नाटक, लेख, आलोचना और अनुवाद प्रत्येक विधा में उन्होंने दलित साहित्य को समृद्ध बनाया। यही नहीं, दलित साहित्य के प्रकाशन की समस्या को भी उन्होंने ही हल किया। उनका बहुजन कल्याण प्रकाशन हिन्दी में दलित साहित्य के प्रकाशन का प्रथम केन्द्र था, जहां से पूरे भारत में अम्बेडकर साहित्य का हिन्दी में प्रचार हुआ। अतः हिन्दी में दलित साहित्य के वर्तमान स्वरूप का उदय जिज्ञासु जी के काल में ही हुआ, जिसमें डा. अम्बेडकर और उनकी विचारधारा को पूर्ण प्रतिष्ठा प्राप्त हुई। उन्होंने लगभग 150 पुस्तकों की रचना की, जिसमें बाबा साहब का जीवन संघर्ष, सन्त रैदास और शिव तत्व प्रकाश उनकी कालजयी कृतियाँ हैं।

शाहदरा (दिल्ली) निवासी श्री बिहारी लाल 'हरित' आज भी दलित समाज के लोकप्रिय कवि हैं। उन्होंने शोषण, अन्याय, असमानता और पराधीन के विरुद्ध जन हृदय को उद्वेलित करने वाले गीतों का सृजन और सगायन किया। सन्त रविदास, डा. अम्बेडकर और बाबू जगजीवन राम के व्यक्तित्व और कृतित्व पर उनके द्वारा रचित काव्य सबसे अधिक लोकप्रिय हुए। उनकी कविता का एक नमूना देखिये–

''अब तो उठ करके आंखें खोलो
रहेगा गफलत खुआब कब तक
लुटा के असमत जहां में अपनी
फिरोगे खाना खराब कब तक।''

उत्तर प्रदेश सरकार में राजस्व मन्त्री माता प्रसाद की साहित्यिक उपलब्धियों से कौन परिचित न होगा। कविता और नाटक विधा में उनकी रचनाओं ने दलित साहित्य को प्राणवान बना दिया है। उनकी अछूत का बेटा, धर्म के नाम पर धोखा, एकलव्य, भीमशतक और लोकगीत आदि रचनाएं दलित साहित्य में विशेष स्थान रखती हैं। उनके एकलव्य काव्य से कुछ पंक्तियां प्रस्तुत हैं–

''है कष्ट भोगते हम अपार
है भूमि नहीं अपनी कुछ भी
ठुकरा कर दूर भगाया है
अति शीत, घाम, वर्षा सहते–
सहते जीवन अकुलाया है
दी आयु झोंपड़ी में गुजार
श्रम हम हर क्षण करते रहते
पाते भर पेट नहीं भोजन
जो काम नहीं कुछ भी करते
उनको सुख के सब आयोजन
फल–फूल मांस ही है आहार।''

स्व. मंगल देव विशारद को यदि मृत्यु ने असमय ही हमारे बीच से न उठा लिया होता, तो आज दलित साहित्य अपने उत्थान पर होता। उनका अध्ययन, लेखन–शक्ति बहुत विशाल थी। 'अर्जक' में प्रकाशित उनका 'शम्बूक काव्य' अद्‌भुत रचना थी, जिसने दलित साहित्य के एक बहुत बड़े शून्य को भरा था। विशारद जी के लम्बे समय तक साथ रहे श्री प्रेम चन्द्र आर्य सम्भवतः उनके व्यक्तित्व और कृतित्व पर शोध कर रहे हैं, जो निश्चय ही एक महान कार्य होगा।

डा. अम्बेडकर के विचारों को तुलनात्मक दृष्टि से यदि किसी ने देश के बौद्धिकों को अवगत कराया है, तो वह डा. डी.आर. जाटव हैं, जिनके अनुसंधान पूर्ण हिन्दी ग्रन्थों ने दलित साहित्य को गौरव प्रदान किया। उनके सर्वाधिक प्रकाशित हिन्दी ग्रन्थ 'डा. अम्बेडकर का नैतिक दर्शन' और 'डा. अम्बेडकर : व्यक्तित्व और कृतित्व' हैं।

पत्रकारिता और साहित्य लेखन दोनों में विख्यात श्री लाहौरी राम बाली का भी दलित साहित्य की श्रीवृद्धि में उल्लेखनीय योगदान है। पंजाबी भाषी होते हुए भी हिन्दी दलित साहित्य की उनकी सेवा हम सबके लिए अभिनन्दनीय है। हिन्दूइज्म–धर्म या कलंक, 'डा. अम्बेडकर और भारतीय संविधान' एवं 'डा. अम्बेडकर जीवन और मिशन' भी बाली की अमर कृतियां हैं।

दलित साहित्यकारों और उनकी रचनाओं को एकत्रित कर एक सूत्र में पिरोने और उन्हें साहित्यिक मंच देने का महान कार्य भारतीय दलित साहित्य अकादमी ने किया है। अकादमी के राष्ट्रीय अध्यक्ष डा. सोहनपाल सुमनाक्षर के नेतृत्व में देश–विदेश में अकादमी की शाखायें कार्यरत हैं जो सभी भाषाओं में दलित साहित्य सृजन करा रही हैं। इससे डा. अम्बेडकर आन्दोलन तीव्र गति से आगे बढ़ रहा है। इस महान कार्य के लिए भारतीय दलित साहित्य अकादमी और इसके अध्यक्ष डा. सोहनपाल सुमनाक्षर बधाई के पात्र हैं। उनका कार्य प्रशंसनीय व वन्दनीय है। •

हिमायती
हिन्दी पाक्षिक पत्र
अम्बेडकर मिशन का प्रतिनिधि पत्र है। इसे मंगाइये, पढ़िए और दूसरों को पढ़ाइये। इससे जन चेतना जागृत होगी और दलित संघर्ष तीव्र होगा। इसका सहयोग वार्षिक शुल्क 200/- मनीआर्डर से आज ही भेजें–
सम्पादक :
हिमायती
बी 3/9, दूसरी मंजिल,
माडल टाउन-1,
दिल्ली-110009
मो. 9810278936

स्वामी, सम्पादक/ प्रकाशक एवं मुद्रक डॉ. सोहनपाल सुमनाक्षर द्वारा वन्दना आफसेट प्रिन्टर्स, A-9 सराय पीपलथला एक्सटेंशन, दिल्ली-33 में मुद्रित तथा रजि. कार्यालय : 233 टैगोर पार्क, माडल टाउन, दिल्ली-9 से प्रकाशित। ❑ सह सम्पादक - जय सुमनाक्षर, फोन : 27421449, मो. 9810278936 **Email-sumanakshar@ymail.com**
नोट : हिमायती में प्रकाशित रचनाओं के लिए सम्पादक की सहमति जरूरी नहीं। हिमायती से सम्बन्धित किसी भी कानूनी कार्रवाई का क्षेत्र दिल्ली न्यायालय तक ही सीमित है।
सम्पादकीय कार्यालय : बी 3/9, दूसरी मंजिल, माडल टाउन-1, दिल्ली-110009